बाइबल टीचर

वर्ष 21 | जून 2024 | अंक 7

सम्पादकीय

यीशु के बिना मैं अपने पापों में खोया हुआ हूं

बाइबल हमें बड़ी स्पष्टता से बताती है कि हम मृत्यु के बाद कहां जायेंगे? दो स्थान है जहां लोगों को अनंतकाल तक रहना पड़ेगा। बाइबल बताती है कि दो मार्ग हैं, यानि एक चौड़ा मार्ग है जिस पर मौज़ मस्ती में बहुत सारे लोग चल रहे हैं, और एक संकरा मार्ग है, जो कठिनाईयों से भरा हुआ है और इस पर आज्ञाकारी लोग चल रहें हैं। (मती 7:13-14)। जो लोग संकरे मार्ग पर चल रहे हैं वे स्वर्ग में परमेश्वर के साथ रहेगें। यीशु ने न्याय के दिन के विषय में इस प्रकार से कहा था, "और यह अनंत दण्ड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनंत जीवन में प्रवेश करेंगे" (मती 25:46)। हम सब का एक दिन न्याय होगा। इब्रानियों 9:27 का लेखक कहता है, "मनुष्य के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।" प्रेरित पौलूस ने भी कहा था कि एक दिन हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जायेगा। (2 कूरि. 5:10)। जबकि मृत्यु और न्याय का दिन निश्चित है इसलिये अपने पापों से उद्धार पाने के लिये हमें यीशु की आज्ञा मानकर उसमें आ जाना चाहिये। यीशु ने कहा था जो मुझमें विश्वास करके बपतिस्मा लेगा उसका उद्धार होगा (मरकुस 16:16)।

बाइबल शिक्षा देती है कि सबने पाप किया और परमेश्वर की महिमा से रहित है। पाप ने जगत में प्रवेश किया और आज मनुष्य को आवश्यकता है कि वह अपने पापों से मुक्ति पा सके। (पढ़िये रोमियों 3:23, 6:23)। केवल यीशु वह बलिदान है जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकते हैं। यीशु एक निष्पाप बलिदान था। (2 कुरि. 5:21)। आपको और मुझे आज यीशु की आवश्यकता है। यीशु इस जगत में मेरे लिये उद्धारकर्ता बनकर आया। उसने हम सबके लिये अपने प्राणों को दिया (यूहन्ना 3:16, 2 कुरि. 5:14)।

यूहन्ना कहता है कि "उसमें जीवन था, और वह मनुष्य की ज्योति थी।" (यूहन्ना 1:4)। मै यीशु का चेला इसलिये भी हूं क्योंकि वह मुझे नया जीवन देता है। (2 तीमु.

2:10)। यीशु जब इस पृथ्वी पर था तब उसने अपने चेलों से एक वायदा किया था कि मैं सदैव तुम्हारे साथ हूं। (मती 28:20)। प्ररितों 2:36 में पतरस कहता है कि परमेश्वर ने उसे प्रभु भी ठहराया और मसीह भी। जिस यीशु के पीछे मैं चल रहा हूं वह मेरा सामर्थी प्रभु है। उसके चेले भी उसके पीछे निडर होकर चलते थे। (प्रेरितों 18:9-10)। चेले इस बात को भलि-भांति जानते थे कि जिसके पास सब सामर्थ है वह हमारी रक्षा करेगा। पौलूस ने कहा था कि "यदि परमेश्वर हमारे साथ है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है? (रोमियों 8:31)। पौलूस बड़ी ही दृढ़ता से इस बात को जानता था कि परमेश्वर उसके साथ है और हमें भी यह बात माननी चाहिये कि हमारा परमेश्वर हमारे साथ है। (प्रेरितों 18:9,10)। यीशु हमारे सगे भाई से भी बढ़कर हमारा सच्चा मित्र है। (नीतिवचन 18:24)। प्रभु ने बहुत पहिले ही यह बात कह दी थी कि मैं न तुझे तजुगा न छोड़ूंगा। (इब्रा. 13:5)। जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं। (फिलिप्. 4:13)। क्या आप प्रभु यीशु में हैं। हमें यह जानने की आवश्यकता है कि तमाम आत्मिक आशिषें हमें प्रभु यीशु में मिलती है। (इफिसियों 1:3)।

यीशु में आने के द्वारा हमारी शैतान पर विजय होती है। शैतान हमें सरलता से अपने चंगुल में नहीं फसा सकता। शैतान से हमें बचकर रहना चाहिये, क्योंकि वह हमारा पीछा करता है। (1 पतरस 5:8)। परमेश्वर अपने वचन में कहता है कि हम उसके आधीन हो जाये, और शैतान का सामना करे, शैतान हमारे पास से भाग निकलेगा। (याकूब 4:7)। एक और विशेष बात यह है कि जो लोग यीशु में हैं और उसके पीछे चल रहे हैं, शैतान उनकी ताक में रहता है। यदि पिछला इतिहास उठाकर देखा जाये तो पता चलता है कि जो लोग बड़ी दढ़ता से यीशु में होकर चल रहे थे वे शैतान के चक्कर में आकर अपने विश्वास से गिर गये। कुछ तो मसीह के पास मन फिराकर वापस आ गये परन्तु कुछ बर्बाद हो गये, क्योंकि वे दुनियादारी की बातों को छोड़ना नहीं चाहते।

जैसा कि हमने देखा कि प्रभु यीशु ने हमारे लिये मृत्यु का स्वाद चख़ा। (रोमियों 5:8)। यीशु की मृत्यु से हमें एक बात सीखने को मिलती है कि उसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की। (1 कुरि. 15)। प्रेरित पौलूस कहता है कि यीशु मसीह में हम सबके पास एक आशा है। 19 और 20 पदों में पौलूस कहता है, "यदि हम केवल इसी जीवन में मसीह से आशा रखते हैं तो हम सब मनुष्यों से अधिक अभागे हैं। परन्तु सचमुच मसीह मुर्दों में से जी उठा है, और जो सो गए हैं, उनमें पहिला फल हुआ।

यीशु ने कहा था कि, "मैंने यह बातें तुम्हें इसलिये कहीं है, कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले, संसार में तुम्हें कलेश होता है, परन्तु साहस रखों यीशु कहता है कि "मैंने संसार को जीत लिया।" (यूहन्ना 16:33)। यदि आज आप प्रभु यीशु में नहीं है तो आपके पास यह सुअवसर है कि आप यीशु के पास आकर उसमें अपना जीवन बिताए। (मती 13:25)।

जीवन की रोटी मैं हूँ
(यूहन्ना 6:48)

सनी डेविड

यूं तो संसार में बहुतेरे बड़े-बड़े प्रसिद्ध लोग हुए हैं, किन्तु जिस विश्वव्यापि प्रसिद्धि तथा प्रभाव को हम यीशु मसीह के जीवन में देखते हैं वह हमें किसी भी अन्य व्यक्ति के जीवन में नहीं मिलती। और यीशु की इस महान विशेषता का एक प्रमुक्ष कारण उसके वे दावे हैं, अर्थात् उसके वे शब्द हैं जो उसने अपने बारे में कहे। हम देखते हैं, कि किसी ने भी नहीं, परन्तु यीशु ने अपने बारे में कहा, कि "मार्ग, सच्चाई और जीवन मैं ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना 14:6)। फिर एक दूसरे स्थान पर उसने कहा, "जगत की ज्योति मैं हूं; जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।" (यूहन्ना 8:12)।

यह एक सच्चाई है, कि संसार है, और संसार में लगभग सभी लोग यीशु मसीह को एक अच्छा मनुष्य मानते हैं। भले ही वे उसे परमेश्वर का पुत्र न मानें; चाहे वे उसे उद्धारकर्त्ता के रूप में ग्रहण न करें। किंतु, तौभी वे उसके उपदेशों, उसकी शिक्षाओं, उसके जीवन और उसके कामों के कारण उसे एक भला वा अच्छा मनुष्य अवश्य मानते हैं। किन्तु कोई भी मनुष्य जान-बूझकर झूठ नहीं बोल सकता, और यदि वह बोलता है तो प्रगट ही है कि वह एक अच्छा मनुष्य कभी नहीं हो सकता। परन्तु यीशु एक अच्छा मनुष्य था, इस कारण जो कुछ भी उसने कहा वह अवश्य ही सच कहा। मेरे कहने का अभिप्राय यह है, कि यीशु को केवल एक अच्छा मनुष्य मान लेना ही काफी नहीं है, परन्तु यदि हम उसे एक भला वा अच्छा मनुष्य मानते हैं तो अवश्य है कि हम उसके दावों को, अर्थात् जो कुछ उसने अपने बारे में कहा, उसे भी मानें। सो इसलिये जबकि वह एक जगह कहता है कि "द्वार मैं हूं : यदि कोई मेरे द्वारा भीतर प्रवेश करे तो उद्धार पाएगा ..." (यूहन्ना 10:9), तो हमें यीशु की इस बात को पूरी गम्भीरता के साथ ग्रहण करना चाहिए। और यदि हम उद्धार पाना चाहते हैं तो हमें यीशु के पास आना चाहिए।

किन्तु, आइए, अब हम यीशु के एक और दावे के ऊपर विचार करें। उसने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूं : जो मेरे पास आएगा वह कभी भूखा न होगा और जो मुझ पर विश्वास करेगा, वह कभी पियासा न होगा।" आगे फिर उसने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूं।" "यह वह रोटी है जो स्वर्ग से उतरी है ताकि मनुष्य उस में से खाए और न मरे" "यदि कोइ इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा मांस है।" (यूहन्ना 6:35, 48, 50, 51)। ये बातें यीशु ने उस समय कहीं जबकि एक बहुत बड़ी भीड़ उसे ढूंढते हुए उसके पा आई। यह भीड़ उसे रोटियों के लिये ढूंढ़ रही थी। क्योंकि एक ही दिन पहले यीशु ने पांच हजार लोगों की इस भीड़ के सामने एक बहुत आश्चर्य-कर्म किया था, जिसके फलस्वरूप उनमें से

प्रत्येक व्यक्ति रोटियां खाकर तृप्त हुआ था। उस दिन उस भीड़ में केवल एक ही लड़का था जिसके पास कुल पांच रोटियां और दो मछलियां थीं। यीशु ने उस लड़के से वह भोजन ले लिया, और फिर उसके लिये धन्यवाद देकर, उसने अपने चेलों से कहा, कि इस भोजन को भीड़ में सब को बांट दो। लिखा है, कि जब सब लोग खा चुके तो बचे हुए टुकड़ों की बारह टोकरियां उठाई गई।

लेकिन यीशु के इस आश्चर्य-कर्म को देखकर, उस पर विश्वास लाने और उसके पीछे हो लेने के विपरीत वे लोग उसे केवल रोटियों के लिये ही ढूंढ रहे थे। परन्तु यीशु ने उनसे कहा, कि, "नाशमान भोजन के लिये परिश्रम न करो परन्तु उस भोजन के लिये जो अनन्त जीवन तक ठहरता है।"

रोटी का मनुष्य के जीवन में बड़ा ही विशेष महत्व है। रोटी हम सब के लिये एक बड़ी ही आवश्यक वस्तु है। रोटी को प्राप्त करने के लिए हम मेहनत और परिश्रम करते हैं। और रोटी की आवश्यकता उतनी ही विश्वव्यापी है जितना कि स्वयं मनुष्य। परन्तु जिस प्रकार मनुष्य को रोटी की आवश्यकता है उसी प्रकार उसे अपनी आत्मा को बचाने के लिये यीशु की आवश्यकता है। यीशु ने कहा, "जीवन की रोटी मैं हूं।" यीशु वह रोटी है जिसे खाकर मनुष्य फिर भूखा न होगा। यीशु अनन्त जीवन की रोटी है। "यदि कोई इस रोटी में से खाए" यीशु ने कहा, "तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा माँस है।" इसलिये जब यीशु क्रूस के ऊपर मारा गया, तो उसकी मौत मनुष्यों के लिये जीवन का कारण बनी। परमेश्वर का वचन कहता है कि "वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिये हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिस से हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं।" (1 पतरस 2:24)। अर्थात्, यीशु हमारे पापों का प्रायश्चित बना, उसने हमारे पापों को अपने ऊपर ले लिया, वह हमारे स्थान पर हमारे पापों के लिये दण्डित हुआ, वह हमारे स्थान पर मारा गया, उसने हमें बचाने के लिये अपने आप को दे दिया ताकि हम जीवन पाएं।

परन्तु हमारे लिये जीवन का कारण बनने से पहले यीशु को अनेकों जोखिमों में से होकर गुजरना पड़ा, जिस प्रकार रोटी को हमारी थाली में आने से पहले, अनाज को पीसा जाता है, फिर गूंधा जाता है और फिर चूल्हे या आग में उसे पकाया जाता हैं। सो हमें जीवन देने के लिये यीशु ने मनुष्यों के हर प्रकार के विरोध और वाद-विवाद का सामना किया। क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने मनुष्य को बचाने के लिये अपने पुत्र को दे दिया। यह परमेश्वर की इच्छा थी कि उसका पुत्र जगत के पापों के लिये प्रायश्चित बने। इसलिये पवित्र शास्त्र उसके बारे में यों कहता है कि, "वह सताया गया तौभी सहता रहा और अपना मुंह न खोला, जिस प्रकार भेड़ बध होने के समय व भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शान्त रहती है, वैसे ही उसने भी अपना मुंह न खोला।" (यशायाह 53:7)। और फिर एक और जगह लिखा है कि उस ने, "उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके, क्रूस का दुख सहा।" (इब्रानियों 12-2)।

यीशु ने रोटी के समान अपने आपको हमारे लिये दे दिया। उसने अपने आप को

इसलिये दे दिया ताकि हम जीवन पाएं। परन्तु मित्रो, बड़े ही अफसोस की बात यह है, कि हम में से अधिकांश लोग आज भी उस नाशमान भोजन के लिये परिश्रम कर रहे हैं जिसे खाकर मनुष्य फिर भूखा हो जाता है, जिसे खाकर मनुष्य मर जाता है। परन्तु मैं आपको बताना चाहता हूं कि परमेश्वर आज आपको वह भोजन देना चाहता है जो अनन्त जीवन तक ठहरता है; जिसे खाकर मनुष्य फिर कभी भूखा न होगा। "यदि कोई इस रोटी में से खाए" यीशु ने कहा, "तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के भोजन के लिये दूँगा" यीशु ने कहा, "वह मेरा मांस है।" क्या आप अपने जीवन को बचाना चाहते है? क्या अपनी आत्मा को नरक में मरने से बचाना चाहते हैं? आईए, यीशु के पास आईए, वह आपकी आत्मा को बचानेवाला भोजन है। उसने अपनी देह को आपके पापों के कारण बलिदान कर दिया, वह आपको बचाने के लिये कुर्बान हो गया। यीशु आपके जीवन की रोटी है। परन्तु क्या आप उसे स्वीकार करने को तैयार हैं? उस रोटी में जीवन है, और वह जीवन, अर्थात् अनन्त जीवन आज आपका हो सकता है। यदि आप उसमें अपने पूरे मन से विश्वास लाएंगे, यदि आप नाशमान सांसारिक जीवन से अपना मन फिराएंगे, और फिर बपतिस्मा लेकर अपने मरनहार जीवन को जल-रूपी कब्र के भीतर दफना देंगे, तो सचमुच वह जीवन आज आपका हो सकता हैं।

मित्रो, जबकि परमेश्वर हम से इतना अधिक प्रेम करता है, कि हमें बचाने को उसने स्वर्ग से हमारे लिये रोटी को उतारा, तौभी ऐसे बड़े उद्धार से निश्चिन्त रहकर हम क्योंकर बच सकते हैं? प्रभु यीशु ने एक जगह कहा, "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे, और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? या मनुष्य अपने प्राण के बदले में क्या देगा?" सम्पूर्ण जगत में आपकी आत्मा बड़ी ही महत्वपूर्ण वस्तु है। यदि ऐसा न होता तो परमेश्वर अपने पुत्र को स्वर्ग से पृथ्वी पर मरने को कदापि न भेजता। क्या आप अपनी आत्मा को बचाना चाहते हैं? यीशु जीवन की रोटी है। वह आपकी निर्बल आत्मा को बल देगा। वह आपको हमेशा की जिंदगी देगा। वह चाहता है कि आप उसमें विश्वास लाकर उसकी आज्ञाओं को मानें। परमेश्वर आपको अपने वचन पर चलने के लिये सामर्थ दे।

पवित्र आत्मा का परिचय देना

जे. सी. चोट

इस पाठ में हम केवल पवित्र आत्मा का परिचय ही देना चाहेंगे। अन्य बहुत सी बातों के साथ-साथ हमें परमेश्वर के वचन के अनुसार यह समझना आवश्यक है कि वह कौन है, कहां से आया, और इस संसार में आज उसका काम क्या है।

पहले तो हमें यह समझना आवश्यक है कि पवित्र आत्मा परमेश्वरत्व (यानि Godhead) में तीसरा व्यक्ति है। परमेश्वर है, मसीह है और फिर पवित्र आत्मा है। मसीह ने अपने प्रेरितों से उनका उल्लेख इसी क्रम में किया था जब उसने कहा, "तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ, और उन्हें पिता और

पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो" (मत्ती 28:19)।

इफिसियों 4:4-6 में प्रेरित पौलुस ने घोषणा की कि एक ही परमेश्वरएक ही मसीह और एक ही आत्मा है। रोम के मसीहियों के नाम पत्र लिखते हुए उसने इन तीनों का उल्लेख किया, "और हे भाइयों; यीशु मसीह के और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिला कर, तुम से विनती करता हूं कि मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो" (रोमियों 15:30)

2 कुरिन्थियों 13:14 में उसने फिर से इन तीनों का परिचय कराया, "प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह और परमेश्वर का प्रेम और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे, आमीन।"

तीन व्यक्तियों के होने के करण कुछ लोग परमेश्वर , मसीह तथा पवित्र आत्मा को 'ट्रिनटी' (यानि त्रिएकता) का नाम भी देते हैं। बेशक वे तीनों अलग-अलग व्यक्तित्व है, परन्तु है वे तीनों एक हैं। कइयों के लिये इसे समझ पाना सिर से ऊपर की बात लगती है। कुछ लोग यह मानना चाहते हैं कि तीन परमेश्वर हैं। इसे समझने के लिये, ऐसे लोग हैं जो कहते हैं कि यीशु ही सब कुछ है, पर कभी वह " परमेश्वर पिता" होता है और कभी "पवित्र आत्मा" बन जाता है। इस शिक्षा को "ओनली जीज़स" (यानि अकेला यीशु) नामक शिक्षा के नाम से जाना जाता है। बिना किसी शक के यह गलत शिक्षा है।

बेशक हमारे लिये यह समझ पाना कठिन हो सकता है कि ऐसा कैसे हो सकता है कि एक परमेश्वर एक मसीह और एक पवित्र आत्मा हो, और तीनों अलग-अलग व्यक्ति या ईश्वरीय जीव हों, पर फिर भी तीनों "एक किये हुये" हों (जोकि परमेश्वर के वर्णन के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले अब्रानी शब्द "एक" (achid) का अर्थ है: "हे इस्त्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है।" (व्यवस्थाविवरण 6:4)। पर बाइबल हमें यही तो बताती है और इस कारण हमें विश्वास से इसे मानना आवश्यक है, चाहे अपनी सीमित से हमें इसकी समझ आए या नहीं।

परमेश्वर , मसीह और पवित्र आत्मा के एक होने को समझने के लिये पवित्र शास्त्र में ट्रिनटी (या त्रिएक) शब्द का तो इस्तेमाल नहीं हुआ, परन्तु उन्हें "परमेश्वरत्व" कहा गया है। पौलुस ने अथेने के लोगों में प्रचार किया था, "अत: परमेश्वर का वंश होकर हमें यह समझना उचित नहीं कि ईश्वरत्व, सोने या रूपए या पत्थर के समान हैं, जो मनुष्य की कारीगरी और कल्पना से गढ़े गए हों" (प्रेरितों 17:29)।

परमेश्वर का इनकार करने वालों के पास पौलुस ने घोषणा की, "उसके अनदेखे गुण, अर्थात उसकी सनातन सामर्थ और परमेश्वरत्व, जगत की सृष्टि के समय से उसके कामों के द्वारा देखने में आते हैं, यहां तक कि वे निरुत्तर है" (रोमियों 1:20)। मसीह की बात करते हुए उसने कहा, "क्योंकि उसमें ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता सदेह वास करती है।" (कुलुस्सियों 2:9)। इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वरत्व जैसा कि इन वचनों में हम देखते हैं, परमेश्वर , मसीह और पवित्र आत्मा को मिलाकर ही बनता है।

परन्तु यह परमेश्वरत्व कब से है? जहां हमें एक के बारे में पढ़ने को मिलता है, वही दूसरों के बारे में भी होता है। उसके बारे में सबसे पहले हम संसार के आरम्भ में पढ़ते

हैं, जो इस बात का संकेत है कि वे सृष्टि से पहले यानि अनंतकाल से हैं, जिसका अर्थ यह हुआ के वे खुदा हैं।

बाइबल की पहली आयत कहती है, "आदि में परमेश्वर यानि एलोहीम इब्रानी भाषा में "परमेश्वर" के लिए इस शब्द का बहुवचन रूप ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की" (उत्पत्ति 1:1)। "परमेश्वर" यानि एलोहीम में परमेश्वर , मसीह और पवित्र आत्मा तीनों आते हैं। फिर से, सृष्टि के संबंध में हम पढ़ते हैं, "फिर परमेश्वर ने कहा, 'हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं"' (उत्पत्ति 1:26)। यूहन्ना ने कहा, "आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के पास था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था। सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई" (यूहन्ना 1:3)। "... तथा परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मंडराता था" (उत्पत्ति 1:2)। पवित्र आत्मा की इन आयतों से हम साफ़ देख सकते हैं कि परमेश्वरत्व के तीनों व्यक्ति आदि में थे जिसका अर्थ यह हुआ कि वे सदा से हैं। इनमें से कोई भी सृजा हुआ जीव नही हैं।

यदि हम परमेश्वरत्व के हर सदस्य का अध्ययन करें तो हम पाएंगे कि हर किसी ने एक भूमिका निभाई या उसने काम किया था। यह पूरे पुराने नियम में तो मिलता ही है, नये नियम के समय में भी मिलता है। पवित्र आत्मा ने विशेष तौर पर कई लोगों को पवित्र शास्त्र को लिखने के लिए प्रेरणा और अगुआई दी ताकि उसे संभालकर रखा जा सके और फिर हम तक पहुंचाया जा सके।

पतरस ने लिखा, "क्योंकि जब उसने परमेश्वर पिता से आदर और महिमा पाई और उस प्रतापमय महिमा में से यह वाणी आई, यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूं। तब हम उसके साथ पवित्र पहाड़ पर थे और स्वर्ग से यही वाणी आते सुनी। हमारे पास जो भविष्यवक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा। तुम यह अच्छा करते हो जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक सीमा है, जो अन्धियारे स्थान में उस समय तक प्रकाश देता रहता है, जब तक कि पौ न फटे और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। पर पहले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यवाणी किसी के अपनी ही विचारधारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती, क्योंकि कोई भी भविष्यवाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे" (2 पतरस 1:17-21)।

आप फिर से देख सकते हैं कि इन आयतों में परमेश्वरत्व के तीनों सदस्यों का वर्णन है, परन्तु इनमें पवित्र आत्मा को, जिसके द्वारा पवित्रशास्त्र दिया गया, विशेष तौर पर दिखाया गया है। पौलुस ने लिखा, "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए" (2 तीमुथियुस 3:16-17)।

कहा जाता है कि पुराने नियम में पवित्र आत्मा का वर्णन 88 बार हुआ है और उसके 18 नाम बताए गए हैं। इसके साथ ही नये नियम में उसका वर्णन 264 बार हुआ है और

उसे 39 विभिन्न नामों से बुलाया गया है। यह भी कहा जाता है कि इन नामों में 5 नाम दोनों (पुराने तथा नये) नियमों में बार-बार मिलते हैं जबकि बाइबल में पवित्र आत्मा के 52 अलग-अलग नामों का इस्तेमाल किया गया है।

पवित्र आत्मा को आम तौर पर रहस्यमयी शक्ति या प्रेतात्मा के रूप में दिखाया जाता है, पर बाइबल उसे व्यक्ति या व्यक्तित्व के रूप में दिखाती है। उसके अंदर भावनाएं हैं (इफिसियों 4:30), दिमाग है (रोमियों 8:27), वह बोल सकता है (1 तीमुथियुस 4+1), और इन बहुत सी बातों के अलावा वह दुर्बलता में हमारी सहायता कर सकता है (रोमियों 8:26)।

1. बपतिस्मा लेने पर आत्मा के द्वारा हमारा **जन्म** होता है (यूह. 3:3-5)।
2. वह हमारा **सहायक** है (यूह. 14:16-18)।
3. वह हमारे **छुटकारे का बयाना** है (2 कुरि. 1:22)।
4. वह हमारा **बयाना** है (2 कुरि. 5:5)।
5. हमारे लिए उसे **शोकित** करना संभव है (इफि. 4:30)।
6. हमारे लिए उसे **बुझाना** संभव है (1 थिस्स. 5:19)।
7. वह हमारी **अगुआई** करता है (गला. 5:18)।
8. हम उसमें **रहते** हैं (2 कुरि. 3:6)।
9. हम उसमें **चलते** हैं (गला. 5:16)।
10. उसी के द्वारा हम **फल लाते हैं** (गला. 5:22-23)।
11. उसी के द्वारा हम **देह**, यानि कलीसिया **में प्रवेश करते हैं** (1 कुरि. 12-13)।
12. वह हम में **वास करता है** (2 तीमु. 1:14; 1 कुरि. 3:16,17)।
13. वह हम में **रहता है** (1 यूह. 4:13)।
14. वह हमें **सामर्थ** देता है (इफि. 3:16-21)।
15. उसी के द्वारा हम देह की क्रियाओं को **मारते** हैं (रोमि. 8:13)।
16. वह **गवाही देता** है कि हम परमेश्वर की संतान हैं (रोमि. 8:16)।
17. वह हमारे लिए **विनती करता** है (रोमि. 8:27; इफि. 2:18)।
18. वह हमारे लिए **आहे भरता** और बयान से बाहर शब्दों का इस्तेमाल करता है (रोमि. 8:26)।
19. वह हमें **सिखाता** है (1 कुरि. 2:13)।
20. वह **जांचता** है (1 कुरि. 2:14)।
21. उसमें हम **प्रार्थना** करते हैं (यहूदा 1:19,20)।
22. वह हमें **जीवन देता** हैं (यूह. 6:63)।
23. वह हमें **स्वतंत्रता दिलाता** है (2 कुरि. 3:17)।
24. हमारे दर्पण में मसीह के चेहरे को देखने पर, वह हमें **बदल देता** है (2 कुरि. 3:18)।
25. उसके द्वारा हम जीवन की **कटनी काटते** हैं (गला. 6:8)।
26. उसके द्वारा हमरी **पहुंच पिता तक** होती हैं (इफि. 1:18)।

27. आत्मा की सामर्थ के द्वारा हमारी **आशा बढ़ती** है (रोमि. 15:13)।
28. आत्मा के द्वारा हम **परमेश्वर का नियम स्थान** बनते हैं (इफि. 2:22)।
29. कलीसिया के साथ-साथ, वह भी कहता है, कि **"आओ"** (प्रका. 22:17)।

यह शब्दावली, अपने आप में ही, बड़ी मज़बूती के साथ यह संकेत देती है कि हम जब मिलकर अपने उद्धारकर्ता की बाट जोहते हैं, तो पवित्र आत्मा इस संसार में कलीसिया के साथ रह रहा होता है।

पौलुस साहसी था (2:2 , 3)

अर्ल डी. एडवर्डस्

पौलुस एक आदर्श मसीही सन्देशवाहक था। वह चाहता था कि "सब बातों में वही (मसीह) प्रधान ठहरे" (कुलुस्मियों 1:18)। उसने स्वयं को पापी मनुष्य होने का अंगीकार किया (1 तीमुथियुस 1:15)। 1 थिस्सलुनीकियों अध्याय 2 वर्णन करता है कि पौलुस किस प्रकार का सन्देश वाहक था।

समय-समय पर पौलुस को एक साहसी सन्देशवाहक होना था। यद्यपि उसके पास पीछे हटने का कारण था क्योंकि फिलिप्पी में उसके साथ बुरा व्यवहार किया गया (देखें आयत 2; प्रेरितों 16:16-24), अपनी रक्षा के लिये उसने परमेश्वर पर भरोसा किया। वह दूसरे प्रेरितों के समान ही था, जिन्होंने कहा, "मनुष्यों की आज्ञा से बढ़कर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना ही हमारा कर्त्तव्य है" (प्रेरितों 5:29)।

उसका सन्देश अति उत्तम था। वह "परमेश्वर का सुसमाचार" था (आयत 2), स्वर्ग से परमेश्वर का सुसमाचार था। वह उद्धार, मृत्यु के चारों ओर केन्द्रित, गाड़े जाने और यीशु के पुनरूत्थान का सुसमाचार था (देखें 1 कुरिन्थियों 15)। कुछ लोगों ने झूठे सुसमाचार का प्रचार किया, परन्तु पौलुस ने केवल सच्चे सन्देश का प्रचार किया, सुसमाचार जिसमें परमेश्वर के उद्धार का सामर्थ्य पाया जाता था (रोमियों 1:16)।

उसका चाल चलन शुद्ध था। उसने लिखा, "क्योंकि हमारा उपदेश न भ्रम से है और न अशुद्धता से ..." (आयत 3)। पौलुस की जीवनशैली ने उसके सन्देश को विश्वासनीयत दी। वह "अशुद्धता" का दोषी नहीं था जिसे सम्भवत: यौन अशुद्धता से जोड़ा जाता था। पराए लोगों की धार्मिक प्रथाएँ उनके मंदिरों पर अवैध यौन गतिविधियों के द्वारा चित्रित किया जाता था, परन्तु पौलुस ने आत्मिक बातों का वर्णन किया, जो कि अपनी देह को अपने नियंत्रण में रखना है।

उसका इरादा अच्छा था। उसने लिखा कि "क्योंकि हमारा उपदेश न ... और न छल के साथ है" (आयत 3)। सुसमाचार प्रचार के लिये पौलुस का इरादा शुद्ध था। दूसरे लोग "चापलूसी की बातें" कर विश्वास को लेकर ठग सकते थे (आयत 5), परन्तु पौलुस ने थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को स्मरण कराया कि, उसे उनसे अपने व्यक्तिगत लाभ की कोई इच्छा नहीं थी। उसका इरादा शुद्ध और सही था-उन्हें देखना कि वे परमेश्वर के द्वारा बचाए जाएँ।

आज हमारा साहस कहाँ गया? मसीह के सुसमाचार को बाँटने और प्रचार करने के लिये हममें खतरे उठाने की इच्छा होनी चाहिए। जब लोगों को हम मसीह के बारे में सिखाते हैं, हमारा सन्देश सच, हमारा चाल चलन शुद्ध और हमारा इरादा सच्चा चाहिए।

विश्वासयोग्य प्रचारक (2:2–6)

हर सच्चा प्रचारक विश्वासयोग्य बनना चाहता है। वह ऐसा प्रचारक बनने की इच्छा रखता है जिसे परमेश्वर की प्रशंसा प्राप्त हो।

विश्वासयोग्य प्रचार के प्रमुख तत्व क्या हैं?

विरोध के बीच साहसी बने रहना (2:2)। पौलुस दण्ड भोगने के बाद बन्दीगृह से बाहर आया, परन्तु न तो भूख, प्यास और न ही कठिन परिश्रम उसे परमेश्वर के वचन का प्रचार करने से रोक पाए।

सुसमाचार पहुँचाने में सच्चा (2:3)। वह थिस्सलुनीकियों के पास भ्रम के साथ नहीं आया। उसने उन्हें सुसमाचार को दिया जो उसे सौंपा गया था।

परमेश्वर को प्रसन्न करने को समर्पित (2:4)। वह *केवल* अपने परमेश्वर की स्वीकृति चाहता था।

सिर्फ *विश्वासयोग्य* प्रचारक ही न्याय सिंहासन के सामने खड़ा हो सकता है। किसी भी मनुष्य ने बड़ी बुलाहट के लिये लालसा नहीं छोड़ी। ✎

शुद्ध हृदय से (2:3–6)

एक अच्छे कार्य का मूल्य होता है चाहे उसकी शुरूआत बुरे इरादे के साथ क्यों न की गई हो। प्रचार लोगों के लिये आशीष ला सकता है, चाहे जो उसका प्रचार करता है गलत कारणों से उसे क्यों न करता हो। इसी कारण, सच्चा प्रचार जो दृढ़ता के साथ बढ़ता है वह परमेश्वर का सामर्थ्य होता है। प्रभु के द्वारा इसकी स्वीकृति दी जाएगी और मनुष्यों के लिये वह बड़ा आशीष का कारण ठहरेगा।

पौलुस ने सभी प्रचारकों को प्रेरित करने के विषय में अपने को एक उदाहरण के रूप में रखा है। हरेक प्रचारक अपने आप से पूछे कि, "किस प्रकार का हृदय मेरे पास है?"

भ्रम से रहित हृदय। पौलुस को भ्रम में कोई रूचि नहीं थी। उसने सत्य को पाया और उन सभी को जो उसे सुनेंगे, उसका प्रचार करने निकल पड़ा। मसीही शहीदों ने अपना जीवन कुशलता से झूठ बोलने के लिये नहीं दिया।

अशुद्धि से शुद्ध हृदय। पौलुस दुष्टता के कामों से आगे नहीं बढ़ाया गया या अशुद्धता से उसके जीवन को चित्रित नहीं किया गया। उसके पास एक साफ सुथरा विवेक और शुद्ध मन था। उसने थिस्सलुनीकियों के भटके लोगों का उद्धार शुद्ध विवेक के साथ ढूँढा।

बुरे इरादों से स्वतंत्र हृदय। उसने कपटी मन से प्रचार नहीं किया, न ही वह छली, अनुचित रीति से या चतुराई से कार्य करने वाला प्रचारक था। वह निष्कपट और विश्वासयोग्य था।

उसने लोगों की सेवा उन्हें मसीह में लाने के द्वारा की, परन्तु परमेश्वर को प्रसन्न करने की उसकी इच्छा सबसे बड़ी थी। जब वह मसीही बना, तब उसने अपने यहूदी मित्रों को खुश करने वाले सभी इच्छाओं का त्याग कर दिया। उसका हृदय केवल परमेश्वर की स्वीकृति चाहता था। नए विश्वासियों से या किसी और से व्यक्तिगत आदर पाने की इच्छा उसके जीवन

में प्रवेश नहीं कर पाई।

धन उसके मन को भटका नहीं पाया; लोभ या लालच उसे विवश नहीं कर पाया। अपने कार्य के अधिकांश भाग में वह एक व्यावसायिक मिशनरी या सेवक था, स्वयं की सहायता के लिये उसने अपने तम्बू-बनाने के गुणों का प्रयोग किया।

संसार कितना आशीषित हो जाएगा यदि सभी प्रचारक जैसा पौलुस था उसके समान प्रेरिताई में शुद्ध आचरण वाले बन जाएँ? ऐसे प्रचारकों का आदर क्यों जो कठिन समयों में असफल रहे? क्या यह विषय इरादों का है? म्ब

पौलुस कोमल हृदय व्यक्ति था (2:6-8)

आयत 2 और 3 में, पौलुस स्वयं को साहसी बताता है। आयत 7अ में, उसने कहा, "हम ने भी तुम्हारे बीच में रहकर कोमलता दिखाई है।" वह अधिकारियों के प्रति साहसी और विश्वासियों के प्रति कोमल था। "कोमल" अर्थात् वह मनुष्य जिसके पास बिना झिझक के पहुँचा जा सकता है। वास्तव में, उसने थिस्सलुनीकियों की चिंता की, वैसे ही "जिस तरह माता अपने बालकों का पालन-पोषण करती है" (आयत 7ब)।

"पौलुस का [अपने] अधिकार पर जोर" (आयत 6)। क्योंकि वह एक प्रेरित था, उसके पास स्पष्ट शब्दों में कहने, कठोरता दिखाने और आर्थिक सहायता के लिये बोझ डालने के अधिकार थे। परन्तु, इस अधिकार के साथ उसने कलीसिया पर कोई माँग नहीं रखी।

पौलुस ने "उनके बीच कोमलता दिखाई (आयत 7)। थिस्सलुनीके की कलीसिया शिशु और अनुभवहीन थी। इसलिये, पौलुस ने उनका पालन पोषण बच्चों के समान किया, जैसे कि "तुम्हारी लालसा ... प्रिय हो गए थे" (आयत 8)।

पौलुस उनके लिये समर्पित था (आयत 8)। उसने लिखा कि, "वैसे ही हम तुम्हारी लालसा करते हुए, न केवल परमेश्वर का सुसमाचार पर अपना अपना प्राण भी तुम्हें देने को तैयार थे ..." एक कोमल, प्रेमी स्वभाव का मनुष्य केवल शब्दों के द्वारा ही चिंता नहीं; परन्तु त्याग भी करता/करती है। जैसे एक माता अपने बच्चों का "पालन पौषण करती है," वैसे ही पौलुस ने उन्हें सुसमाचार (आत्मिक भोजन) दिया। शब्द "पालन पोषण" एक मजबूत भावनात्मक बंधन की ओर संकेत करता है। यदि आवश्यक होता तो अपना जीवन उनके लिये पहले ही दे चुका होता (देखें रोमियों 9:1-3)।

मसीही होने के रूप में हमें पौलुस का दूसरों के लिये कोमलता दिखाने का उदाहरण का पालन करना और विशेषकर नए विश्वासियों के साथ करना चाहिए। हमें उन पर ध्यान देना और परमेश्वर के वचन से उन्हें तृप्त करना चाहिए। हमें उन्हें न केवल सुसमाचार से परन्तु अपने जीवन से भी सीखना चाहिए। म्म

अपने प्रचार के अनुसार जीना (2:7-12)

एक प्रचारक का चाल चलन शोभनीय होनी चाहिए। वह सच्चाई का प्रचार करता है, पर यदि स्वयं सच्चाई में नहीं चलता तो, उसका सन्देश सुनकर भी सुना नहीं जाएगा। हम जो होते है वह हम जो कहते हैं उसे प्रभावित करता है। पौलुस का उदाहरण सर्वश्रेष्ठ था। उनके सामने उसका जीवन उदाहरणों की एक उपजाऊ भूमि थी। वह कहेगा, "देखो तुम्हारे बीच मेरा चाल चलन कैसा था। क्या इससे पता नहीं चलता कि मैं तुम्हारी कितनी चिंता करता था और अपने व्यक्तिगत मनन के बारे में कितना गम्भीर था?" थिस्सलुनीकियों के

लिये पौलुस का उदाहरण व्यक्त करता है कि, हमें अगुवाई कैसे करनी चाहिए।

दृढ़ संकल्प के साथ। उसने उनके साथ बीच ऐसा कार्य किया जैसे एक माता अपने बच्चों की देखभाल और चिंता करती है। वह कोमल और स्नेही बना रहा और अपना समय उनके लिये दे दिया। एक "जन प्रचारक" होकर वह वहाँ केवल उपदेश देने के लिये नहीं था-परन्तु सुसमाचार को नमूना बनाना चाहता था और उसका प्रचार भी करना चाहता था।

लोगों के लिये अपना जीवन देना। वह थिस्सलुनीकियों को केवल अपना समय ही नहीं देना चाहता था। उनकी आत्मिक उन्नति में वह इस रीति से शामिल हो चुका था कि कह सकता था कि वह अपना जीवन भी उन्हें दे चुका था। अच्छे प्रचार में किसी के जीवन के साथ उसके शब्दों की भी जरूरत होती है।

उदाहरण के द्वारा अगुवाई। उसने एक तम्बू-बनाने वाले का काम किया ताकि वह उन पर आर्थिक बोझ न बन पाए। वे इस बात के गवाह थे कि उसने उनके बीच धार्मिकता का जीवन जिया है, और उसने किसी भी रीति से उनका इस्तेमाल या लाभ नहीं उठाया है।

पैतृक अनुशासन के साथ डाँट। जैसे एक पिता अपने बच्चों साथ व्यवहार करता है, पौलुस ने थिस्सलुनीकियों के साथ किया। जहाँ जरूरत होती वह उन्हें सही करता था, परन्तु वे जानते थे कि वह उनसे प्रेम करता था और अनुशासन उनकी उन्नति के लिये दिया जाता था।

पौलुस एक आदर्श प्रचारक था! उसका प्रचार सभी के लिये उत्तम बात होती थी। आप उसे सुनते हैं क्योंकि आप जानते हैं कि वह आपसे प्रेम करता है और उसका कोई कार्य छिपा नहीं है।

पौलुस अच्छा "व्यवहार करनेवाला" था (2:9-12)

एक चिंता करने वाले प्रेरित के समान, पौलुस ने थिस्सलूनीकियों के साथ बहुत अच्छा व्यवहार किया। उसने लिखा कि, "तुम आप ही गवाह हो, और परमेश्वर भी गवाह है कि तुम विश्वासियों के बीच में हमारा व्यवहार कैसा पवित्र और धार्मिक और निर्दोष रहा" (आयत 10)। पैतृक छवि का फिर से प्रयोग करते हुए, पौलुस ने विश्वासियों के प्रति अपने आचरण को एक अच्छा पिता के समान होने का वर्णन किया (देखें आयत 11)। एक अच्छा पिता किस प्रकार का व्यवहार करता है?

अपने बच्चों की जरूरतों की पूर्ति के लिये वह परिश्रम करता है (आयत 9)। पौलुस के पास अधिकार थे कि उसे दिया जाए, परन्तु उसने अपनी आर्थिक जरूरातों की पूर्ति के लिये तम्बू-निर्माण का व्यवसाय किया, विश्वासियों पर बोझ नहीं डालना चाहता था, जो कि विश्वास में नए थे। उसने उन्हें आत्मिक भोजन खिलाया और उसके बदले में किसी भी वस्तु की आशा नहीं की। वह "परिश्रम," "कठिनाई," से होकर गया और थिस्सलुनीकियों के बीच रहने और उन्हें आत्मिक भोजन खिलाने के लिये "रात और दिन" काम किया करता था।

वह सही चाल में चलता है (आयत 10)। पौलुस ने वर्णन किया कि थिस्सलुनीकियों के बीच में उसका व्यवहार कैसा "पवित्र" और "धार्मिक" और "निर्दोष" रहा। एक पवित्र मनुष्य वह है जो धार्मिक होता है, और परमेश्वर का आदर करता है। थिस्सलुनीकियों की कलीसिया ने नि:संदेह पौलुस से प्रार्थना या आराधना करना उसे देखकर ही सीखा। एक पवित्र मनुष्य वह है जो धार्मिक होता है, परमेश्वर की आज्ञाओं को मानता है। थिस्सलुनीकियों की

कलीसिया के भाइयों ने पौलुस के वचन के प्रति आज्ञाकारिता से सीखा था कि किस प्रकार दूसरों के प्रति भले और उदार बने। एक निर्दोष मनुष्य पापरहित नहीं होता परन्तु वह वो होता है जो अपने को सही करने का प्रयास करता है और जब भी गलती करता है तो क्षमा माँगता है। थिस्सलुनीकियों ने देखा कि जब वह किसी भाई को कष्ट पहुँचाता तो क्षमा माँगता था।

उसके वचन सही हैं (आयतें 11, 12)। थिस्सलुनीकियों को पौलुस के पिता के समान "उपदेश करते," और "शान्ति देते" और समझाते रहने से लाभ हुआ। कुछ लोग कहते हैं कि हमें केवल अपने विश्वास पर बने रहना चाहिए इसकी चर्चा नहीं करनी चाहिए। परन्तु जिस प्रकार अच्छे पिता जब जरूरी होता है तब बोलना ओर उत्साहित करना चाहते हैं, वैसे ही विश्वासियों को भी अपने वचनों का प्रयोग कलीसिया की उन्नति के लिये करने की इच्छा रखनी चाहिए। हमें उत्साहित करना चाहिए जब हम इसकी जरूरत देखते हैं, अच्छे जीवन जीने के लिये दूसरों की सहायता करनी चाहिए। हमें टूटे मन वालों को ढाढस देनी चाहिए। हमें समझाना चाहिए की परमेश्वर की भलाई का गवाह बने।

पौलुस ने व्यवहार का जो नमूना रखा उसका पालन हमें भी करना चाहिए। हम काम करें और कलीसिया की जरूरतों के लिये दें, अपनी भौतिक आशीषों के लिये परमेश्वर की सहायता लें। हमारा चाल चलन सही हो, पवित्र, धार्मिक और निर्दोष बने। हम दूसरों को विश्वासयोग्य जीवन जीने के लिये उपदेश करते," और "शान्ति देते" और समझाते रहने के समय सही शब्दों का प्रयोग करें।

उनका विश्वास और प्रेम (1:4)

ऑवन डी. आल्ब्रट

क्योंकि हम ने सुना है, कि मसीह यीशु पर तुम्हारा विश्वास है, और सब पवित्र लोगों से प्रेम रखते हो।

"क्योंकि हम ने सुना है कि मसीह यीशु पर तुम्हारा विश्वास है" (1:4)

अनुवादित क्रिया रूप **सुना** (ंवनेंदजमे) नये नियम में बार-बार मिलता है। यूनानी भाषा में यह अनिश्चित भूतकाल कृदंत है और आयत 3 में "हम धन्यवाद करते हैं" क्रिया का मातहत है। "सुना" की क्रिया धन्यवाद देने से पहले हुई थी। यही यूनानी संरचना मरकुस 16:16 में मिलती है, जहां "विश्वास करे" और "बपतिस्मा ले" भी अनिश्चित भूतकाल कृदंत हैं, जिसका अर्थ है कि वे "उद्धार होगा" की मुख्य क्रिया के कार्य से पहले आना चाहिए।

पौलुस और तीमुथियुस को कुलुस्से के लोगों के जीवनों का पता इपफ्रास और शायद अन्य लोगों की बातों से चला था। विभिन्न कलीसियाओं से सम्बन्धित पौलुस को मिली खबरों में अच्छा आचरण, बुरा व्यवहार और मण्डलियों की शिक्षाएं और झूठी बातें थीं। कई बार उसने बताया कि उसे ये बातें कहां से पता चली हैं, जैसे कुरिन्थियों के बारे में उसे खलोए के घराने से पता चला था (1 कुरिन्थियों 1:11)। आत्मा भी मण्डलियों के बीच की परिस्थिति के सम्बन्ध में उसे जानकारी प्रकट कर देता था (1 कुरिन्थियों 5:3; कुलुस्सियों 2:5)। अन्य समयों में उसने केवल इतना कहा कि उसे पता चला है पर उसने यह नहीं

बताया कि उसे कहां से पता चला है (1 कुरिन्थियों 5:1; 1 थिस्सलुनीकियों 1:9)।

पौलुस आम तौर पर कलीसियाओं से मिली रिपोर्टों का उत्तर देता था। फिलिप्पियों में पौलुस ने मिलकर न चलने वाले यूओदिया और सुन्तुखे का नाम लिया, यह ऐसी समस्या थी जिसे सुधारा जाना आवश्यक था (फिलिप्पियों 4:2)। हुमनियुस और फिलेतुस का उल्लेख 2 तीमुथियुस 2 :16-18 में है जिनसे सावधान रहना आवश्यक था। देमास जिसने पौलुस को छोड़ दिया था, का नाम 2 तीमुथियुस 4:10 में दिया गया है। उनका ओर ध्यान दिलाने का पौलुस का उद्देश्य उन दो स्त्रियों की सहायता करना था, जिनमें झगड़ा था, झूठी शिक्षा देने वाले दो लोगों से चौकस करना और एक भाई के बारे में बताना था, जो विश्वास को छोड़ गया था।

याकूब ने लिखा कि हम "एक-दूसरे की बदनामी" न करें (याकूब 4:11) या "एक-दूसरे पर दोष" न लगाएं (याकूब 5:9)। क्या मसीही लोगों के गलत जीवन और कलीसियाओं की खबरें केवल गप हैं? दूसरों के मामले में बिना कारण टांग अडाने की बात अर्थात गप का उल्लेख अन्य बुराइयों के साथ इसे गलत ठहराते हुए किया गया है (रोमियों 1:29; 2 कुरिन्थियों 12:20; 1 तीमुथियुस 5:13; 2 तीमुथियुस 3:3; तीतुस 2:3)। लोगों के बारे में ऐसी बातें करना किसी समस्या को सुलझाने के लिए दूसरों में भरोसा करने या किसी समस्या पर चर्चा करने से अलग है।

पौलुस को कुलुस्से के भाइयों और बहनों के सम्बन्ध में जो पता चलता था वह अच्छी बात थी। अन्य लोग उनके विश्वास की बातें कर रहे थे, उस विश्वास की, जिसने उन्हें मसीह के वफादार लोग बना दिया था। वे मत्ती 5:14ख में यीशु द्वारा बताए गए लोगों की तरह थे "जो नगर पहाड़ पर बसा हुआ है, वह छिप नहीं सकता।" हर मसीही का लक्ष्य इस प्रकार से रहना होना चाहिए जिससे दूसरों को उसके बारे में सुनकर अपने विश्वास में प्रोत्साहन मिले।

आयतें 4 और 5 में पौलुस ने एक पसंदीदा त्रिपदी "विश्वास" "प्रेम," और "आशा" जोड़ दी। नये नियम के लेखकों ने आम तौर पर इन्हें इकट्ठे रखा है। जे. बी. लाइटफुट ने इन तीन शब्दों के पौलुस के जोड़ को इस प्रकार संक्षिप्त किया है:

> हम *विश्वास* की बातों के लिए जो तुम्हें मसीह यीशु में हैं, और *प्रेम* जो तुम परमेश्वर के सब लोगों के प्रति दिखाते हो, जबकि उस *आशा* के लिए जिसकी तुम राह देखते हो जो आने वाले जीवन के लिए भण्डार के रूप में स्वर्ग में तुम्हारे लिए रखी गई है, धन्यवाद से भरे हैं।

लगता है कि टीकाकार इस पृष्ठभूमि में **मसीह यीशु पर विश्वास** के अर्थ के साथ भिड़ते हैं। विचार की निम्न भिन्नताओं पर ध्यान दें। पहले हर्बट एम. कार्सन ने लिखा है:

> "इस संदर्भ में मसीह यीशु पर वाक्यांश का अर्थ यह नहीं है कि उनके विश्वास की बात मसीह है, बेशक यह सही है, क्योंकि तब मपे या मचपे उपसर्गों की आवश्यकता होगी। इसके विपरीत यह पौलुस का उपयोग है जिसे हम आयत 2 में पहले भी देख चुके हैं। वे मसीह में उस से उनका जीवन लेने के अर्थ में हैं ... इस कारण जो विश्वास वे दिखाते हैं कि उसे शक्ति उन के मसीह के साथ जुड़े होने से मिलती है। उस विश्वास का अभ्यास उसके साथ उन के मिलन से संचालित होता है।

लाइटफुट ने इस निष्कर्ष के साथ सहमति जताई:

यहां और समानान्तर वचन इफिसियों 1:15 में उपसर्ग मद उस दायरे का संकेत देता है जिसमें उस कारक के विपरीत जिसके लिए हैं उनका विश्वास ढूंढ़ता है (तुलना 1 कुरिन्थियों 3:5); क्योंकि यदि यहां अर्थ कारक है तो स्वाभाविक उपसर्क मचस या मपे होना था (उदाहरण के लिए 2:5)।

एफ. एफ. ब्रूस का इसके थोड़ा अलग विचार था:

"मसीह यीशु" यहां सजीव वातावरण में जिसके अन्दर-अन्दर उनका विश्वास दिखाया जाता है उनके विश्वास के कारक के रूप में उतना नहीं देखा जाता प्रतीत होता; यानी जिस विश्वास की प्रेरित बात करता हे वह वह विश्वास है जो पुरूषों और स्त्रियों के रूप में उनका है जो मसीह यीशु में है।

ए. टी. रॉबर्टसन ने यह कहते हुए एक और आयाम जोड़ दिया, "उनका विश्वास मसीह यीशु के दायरे में चलता था" (2 तीमुथियुस 1:13)। यह ईमानदारी से बढ़कर है यह मसीह में आंतरिक भरोसा है। ... "

संक्षेप में "मसीह यीशु पर" का इस्तेमाल पौलुस द्वारा आम तौर पर मसीही लोगों के उस सम्बन्ध के वर्णन के लिए किया गया, जो यीशु के साथ उनका था। इस वाक्यांश से उनके उसके साथ निकट सम्बन्ध और उन आशिषों का सुझाव मिलता है जिन्हें वह देता है। इस वचन में पौलुस के कहने का अर्थ हो सकता है वह विश्वास न हो जो उनका मसीह में था। उसने कर्मवाची सम्बन्धकारक का इस्तेमाल नहीं किया, जिसका अर्थ मसीह का विश्वास है। उस वाक्य रचना के साथ विश्वास की बात कारक के रूप में मसीह पर रखा विश्वास होनी थी। इसके बजाय उसके कहने का अर्थ था कि कुलुस्से के लोग जो मसीह में थे अपने विश्वास पर काम कर रहे थे। उसने उनके विश्वास के बारे में सुना था, उस विश्वास के बारे में जो उन लोगों के मनों में होता है जो मसीह में हैं। इसके लिए वह धन्यवादित था (आयत 3)।

"और सब पवित्र लोगों से प्रेम रखते हो" (1:4)

पौलुस ने पहले कुलुस्सियों के विश्वास की और फिर उनके प्रेम की बात की। विश्वास वह आधार है जिस पर सभी मसीही गुण आधारित हैं (2 पतरस 1:5-7)। सच्चा विश्वास समान विश्वास वाले लोगों को प्रेम की ओर ले जाता है। यीशु के अनुयायियों को एक-दूसरे से अलग करने के बजाय विश्वास हमें अपने साथी मसीही लोगों से प्रेम में पहुंचा देता है।

प्रेम सीमित नहीं है, क्योंकि **सब पवित्र लोगों को** शामिल किया गया है। यह कलीसिया के भीतर विशेष समूह नहीं बनाता है। जिस प्रेम का आरम्भ यीशु ने किया वह जाति, राष्ट्रीयता, सामाजिक स्थिति और सैक्स और व्यक्तित्व के पार पहुंच जाता है। संसार के लिए परमेश्वर का प्रेम (यूहन्ना 3:16) मानवीय पृष्ठभूमियों के कारण अन्तर नहीं करता है। परमेश्वर का प्रेम किसी व्यक्ति के प्रेम के योग्य होने पर उतना आधारित नहीं है जितना परमेश्वर के प्रेम होने का (रोमियों 5:7, 8;1 यूहन्ना 4:8)। मसीही लोगों को उसी प्रकार प्रेम करना आवश्यक है। हमें दूसरों से प्रेम करना आवश्यक है चाहे दूसरे लोग प्रेम के योग्य हों या न। इस प्रकार के प्रेम के द्वारा हम दिखाते हैं कि हम मसीही हैं, यीशु के सच्चे अनुयायी (यूहन्ना 13:35)।

पौलुस कुलुस्से के लोगों के मसीही प्रेम के लिए धन्यवादी था। मसीही गुणों में सबसे बड़ा "प्रेम" (हंचम) है। प्रेम विश्वास और आशा से भी बड़ा है (1 कुरिन्थियों 13:13)। यीशु ने कहा कि प्रेम से ही दूसरों को उसके अनुयायियों की पहचान पता चलती है। पौलुस और पतरस ने लिखा कि मसीही जीवन में सबसे बढ़कर प्रेम को जोड़ा जाए (कुलुस्सियों 3:14; 1 पतरस 4:8)। सबसे बड़ी प्राप्ति के रूप में पतरस ने प्रेम को मसीही विकास के लिए सबसे ऊपर रखा (2 पतरस 1:7)।

"सब पवित्र लोगों" वाक्यांश में पौलुस यह संकेत नहीं दे रहा था कि कुलुस्से के लोग सारे संसार के "सब पवित्र लोगों" को जानते और उन से प्रेम रखते थे। उसके कहने का अर्थ यही होगा कि कुलुस्से के पवित्र लोग और विश्वासी भाई उन "सब" पवित्र लोगों से प्रेम रखते थे जिनके बारे में उन्होंने सुना था या जिन्हें वे जानते थे। दूसरे मसीही लोगों से प्रेम करने से पहले हमें पूरी तरह से जानने की प्रतीक्षा करने की आवश्यकता नहीं है। जैसे ही हम भाइयों से मिलें या उनके बारे में सुनें, हमें चाहिए कि हम उनसे प्रेम करने लगें। हमें परमेश्वर के प्रेम के अनुसार अपने प्रेम का नमूना बनाना आवश्यक है।

"छाप लगने का संदर्भ" (इफि. 1:13)

जे. लॉकहर्ट

बाइबल में छाप यानी मोहर लगने की अवधारणा का इस्तेमाल कैसे किया गया है: (1) राजा की मोहर से पता चलता था कि कोई चीज असली है (एस्तेर 3:12; 1 राजाओं 21:8)। *जब मसीही लोगों पर छाप की जाती है तो इस तथ्य को दिखाता है कि वे परमेश्वर की संतान हैं। उन्हें केवल परमेश्वर की संतान नहीं कहा जाता,* बल्कि वे सचमुच में परमेश्वर की संतान हैं। यूहन्ना ने कहा, "हे प्रियो, अब हम परमेश्वर की सन्तान हैं" (1 यूहन्ना 3:2)।

छाप का अर्थ सुरक्षा होता था। जब दानिय्येल के शेरों की मांद में रखा गया तो उस मांद पर पत्थर के साथ और राजा की अपनी अंगूठी से आधिकारिक रूप में मोहर लगा दी गई (दानिय्येल 6:17)। इसी प्रकार यीशु की कब्र को छेड़छाड़ से बचाने के लिए उस पर छाप की गई थी (मत्ती 27:62-66)। *मसीही लोगों पर सुरक्षा के लिए छाप की जाती है।* पतरस ने कहा कि परमेश्वर की संतान "की रक्षा परमेश्वर की सामर्थ से विश्वास के द्वारा उस उद्धार के लिए जो आने वाले समय में प्रकट होने वाली है, की जाती है" (1 पतरस 1:5)। सुरक्षित रहने के लिए मसीही लोगों को विश्वास रखकर और आदर के अनुसार मसीह की सुनकर और मानकर परमेश्वर के साथ सहयोग करना आश्यक है (देखें यूहन्ना 10:28, 29)।

(3) छाप से स्वामित्व का पता चलता था। 2 तीमुथियुस 2:18, 19 में पौलुस ने विश्वासी मसीही लोगों की अर्थात उनकी, जिन्होंने सच्चाई को पकड़ा हुआ था, पक्की नींव कहा, जो विश्वास से फिरकर गिरेगी नहीं। उस ने कहा कि उन पर यह मोहर लगी है: "प्रभु अपनों को पहचानता है।" "परमेश्वर की नींव के पक्के होने का वर्णन उस छाप से लगाया जाता है, जो परमेश्वर ने इस पर रखी है।" इस रूपक का पौलुस का इस्तेमाल "स्वामित्व को दिखाने के लिए इमारत की नींव पर लगाई जाने वाली मोहर के आधार पर है। ... " परमेश्वर का स्वामित्व प्रकाशितवाक्य 7:3-8 में पवित्र लोगों के मोहर किए जाने पर भी जोर होना आवश्यक है। मसीही लोग वास्तव में परमेश्वर के हैं।

(4) छाप से काम के पूरा होने का पता चलता है। यिर्मयाह 32:9–14 में नबी ने एक खेत खरीदा। इस की कीमत चुकाने के बाद उस ने कागजों पर हस्ताक्षर करके मोहर लगा दी, जिस में बिक्री की शर्तें इत्यादि थीं। रजिस्ट्री पर हस्ताक्षर करने और मोहर लगने से सौदा पूरा हो गया। इसी प्रकार, *मसीही लोगों को यह संदेश देने के लिए कि पाप से हमारा छुटकारा मसीह के क्रूस और सुसमाचार के आज्ञापालन के द्वारा पूरा हो गया है, छाप लगाई जाती है।*

(5) छाप एक चिन्ह हो सकता है। रोमियों 4:11 में पौलुस ने कहा कि अब्राहम ने "खतने का चिन्ह पाया कि उस विश्वास की धार्मिकता पर छाप हो जाए जो उस ने बिना खतने की दशा में रखा था।" खतने का चिन्ह अब्राहम की धार्मिकता की छाप था। कुछ टीकाकारों का विचार है कि बपतिस्मा धार्मिकता का चिन्ह और छाप है। ये व्याख्याकार कुलुस्सियों 2:11–13 का हवाला देते हैं, जहां पौलुस ने खतने और बपतिस्मे के बीच सम्बन्ध दिखाया। छाप के इस पहलू को इतनी दूर नहीं धकेला जाना चाहिए, क्योंकि अब्राहम ने परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराए जाने के बाद खतने का चिन्ह पाया था, जबकि बपतिस्मा हमारी क्षमा और परमेश्वर के साथ सही खड़ा होने से पहले आता है (देखें प्रेरितों 2:38)। इस के अलावा पवित्र आत्मा की छाप मसीही लोगों के लिए किया जाने वाला काम है, जबकि बपतिस्मा हमारे द्वारा किया जाने वाला काम है। परन्तु मसीही लोगों की छाप असली, सुरक्षित, परमेश्वर के और पूरी तरह से छुड़ाए होने का चिन्ह है।

"मैं आशीषित हूं!" (1:3)

मेरा एक मित्र है जो "कैसे हो?" अभिवादन का उत्तर हर बार "मैं आशीषित हूं।" के तीन शब्दों से देता है। वह सही है। वह आशीषित है, और हम सब भी आशीषित हैं।

परमेश्वर सब लोगों को संसारिक आशिषों की बहुतायत से आशीष देता है (देखें मत्ती 5:45; याकूब 1:17)। परन्तु अपनी संतान के लिए परमेश्वर के पास अतिरिक्त आशिषें हैं। वह "हमें मसीह में ... सब प्रकार की आत्मिक आशीष" से आशीष देता है (1:3)। इन आशिषों की दो बातों पर ध्यान दिया जाना आवश्यक है कि वे परमेश्वर की ओर से मिलती हैं और वे केवल उन्हीं के लिए है, जो "मसीह में" हैं।

"मसीह में" (1:3–14)

आयतें 3 से 14 में दस बार पौलुस ने "मसीह में'8 (1:3, 10, 13), "उस प्रिय में" (1:6), या "उसी में" (1:4, 7, 9, 10, 13 [दो बार] इस्तेमाल किया। इन सभी आत्मिक आशिषों का आनन्द लेने के लिए व्यक्ति को वहां होना आवश्यक है, जहां ये आशिषें पाई जाती हैं यानी "मसीह में" (1:3)। कोई मसीह में कैसे आता है?

> क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उस के साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें (रोमियों 6:3, 4)।
>
> क्योंकि तुम सब उस विश्वास करने के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है, उन्होंने मसीह को पहिन लिया है (गलातियों 3:26, 27)।

सबसे बड़ी आशिषें "मसीह में" आत्मिक आशिषें हैं। ये आशिषें मसीही लोगों को आत्मिक, बहुतायत और अनन्त जीवन से आशीष देती हैं।

– जे लॉकहर्ट

मसीही व्यक्ति का भूत, वर्तमान और भविष्य (इफि. 1:3–14)

1:3–14 का अध्ययन स्वाभाविक रूप में तीन भागों में हो जाता है:

- आयतें 3–6: पौलुस ने परमेश्वर के इस देह के बनाने के पिछले पहलू पर चर्चा की जिस में हमें सब प्रकार की आत्मिक आशिषें मिलती हैं।
- आयतें 7–12: उस ने परमेश्वर के मसीह की देह से व्यवहार करने के वर्तमान पहलू की बात की।
- आयतें 13, 14: उस ने इस रहस्यपूर्ण देह के भावी पहलू अर्थात जो कुछ कलीसिया के लिए भविष्य में है, उस की बात की।

हमें चुना गया है! (1:4–6)

परमेश्वर ने हमें अपने लोग, अपनी संतान, अपनी देह और अपनी कलीसिया बनाने के लिए चुना है। एक शब्द में यह चुना जाना "चुनना" है (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 1:4; KJV)। इफिसियों 1:4–6 में पौलुस ने बाइबल की इस बड़ी शिक्षा की चार विशेषताएं समझाई थीं।

ढंग : *"जैसा उस ने हमें ... चुन लिया ..." (1:4)।* परमेश्वर ने इस देह को कैसे बनाया? इस के अंग कैसे जोड़े गए? यह अचानक नहीं हुआ। हमें परमेश्वर की इच्छा के सर्वशक्तिमान कार्य के कारण देह अर्थात कलीसिया के अंग बनने का सौभाग्य मिला है।

हमें मसीह की देह के अंग होने के लिए इसलिए नहीं चुना गया है कि हम बहुत अच्छे हैं या हमारे काम बहुत अच्छे हैं। हमें हर रविवार आराधना सभाओं में भाग लेने या सप्ताह के हर पहले दिन प्रभु भोज में भाग लेने के कारण नहीं जोड़ा गया। यह काम महत्वपूर्ण तो है, परन्तु सच्चाई यह है कि हम देह में केवल इसलिए हैं क्योंकि बहुत पहले अनन्तकाल में परमेश्वर ने चाहा कि हम इस में हो। यदि परमेश्वर के सर्वशक्तिमान होने में हमें इस देह के अंग होने के लिए न चुना होता तो इस संसार की सब धार्मिक रीतियां हमें इस के अंग नहीं बना सकती थीं।

पहले से ठहराए जाने की शिक्षा ने सदियों से लोगों को उलझाया हुआ है। अगस्टिन से लेकर वैसली जैसे बड़े धर्मशास्त्रियों ने सदियों से इस समस्या को सुलझााने की कोशिश की है। नये नियम की शिक्षा यह कैसे हो सकती है कि अपने सर्वशक्तिमान होने में परमेश्वर हमें चुनता है, परन्तु साथ ही "जो भी आए" कहते हुए जिम्मेदारी मनुष्य पर डाल दे?

क्या प्रेमी परमेश्वर कुछ लोगों को तो भलाई के लिए और कुछ को बुराई के लिए चुन सकता है? इस प्राचीन दुविधा का उत्तर हमारे वचन-पाठ में है। उसे देखने से पहले हमें ध्यान देना चाहिए कि हर मसीही उस देह का अंग है और केवल एक कारण के लिए स्वर्ग की ओर जा रहा है कि परमेश्वर ने चुना है।

परमेश्वर द्वारा हमारा चुना जाना अपनी कीमत की जबर्दस्त समझ देने वाला होना चाहिए। हम मसीही होने के कारण क्यों शरमाएं? हमें संसार के राजा की ओर से सम्मान दिया गया है। उस ने हमें चुना है!

उद्देश्य : "... उस ने हमें चुन लिया" (1:4)। क्या पौलुस के कहने का अर्थ यह था कि किसी अन्य मण्डली में आराधना करने वाले लोगों के विपरीत परमेश्वर ने *हमें* चुन लिया

है? नहीं, परमेश्वर ने हमें बचाने और दूसरों को नष्ट करने के लिए नहीं चुना। तो फिर पौलुस के यह कहने का अर्थ क्या था कि परमेश्वर ने हमें चुना है?

इब्रानियों 2:16 परमेश्वर के अर्थ की बात को समझने में हमारी सहायता करता है: "क्योंकि वह तो स्वर्गदूतों को नहीं वरन अब्राहम के अंश को सम्भालता है।" पाप में गिरने वाले स्वर्गदूतों को छुड़ाने की परमेश्वर की कोई योजना नहीं है। उन्हें छुड़ाए हुओं की इस देह का भाग बनाने के लिए चुना नहीं गया है। परमेश्वर ने इस तेजस्वी देह को बनाने के लिए मनुष्यजाति को ही चुना है। उस ने हमें चुना है।

ध्यान से वचन को देखें। यहां चुने जाने की शिक्षा की पुरानी दुविधा की कुंजी मिलती है: "जैसा उस ने हमें ... *उस में* चुन लिया" (1:4)।

अपनी सर्वशक्तिमान इच्छा में परमेश्वर ने उन्हें जो मसीह यीशु में हैं। अनन्त जीवन के लिए पहले से ठहरा दिया। यह निर्णय बदलने वाला नहीं है। यह उतना ही पक्का है जितना परमेश्वर। और किसी का उद्धार नहीं हो सकता। अनन्त जीवन उन्हीं के लिए है, जो प्रभु यीशु में हैं।

यीशु में कौन हो सकता है? कौन इस एक देह का भाग हो सकता है, जो महिमा की ओर जा रही है? जो भी हो, सुसमाचार का उत्तर आज्ञापालन के द्वारा दिया जाए। जो भी आए! कोई भी व्यक्ति जो चाहता है कि वह परमेश्वर का चुना हुआ उद्देश्य बन सकता है।

***अवसर* :** "जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उस में चुन लिया ..." (1:4)। परमेश्वर ने कब निर्णय लिया कि जो मसीह में हैं, उन्हें अनन्त जीवन और सब प्रकार की आत्मिक आशिषें मिलें? संसार को बनाने से पहले, परमेश्वर ने अपनी पूरी योजना बना ली थी। अदन की वाटिका में हुए मनुष्य के विद्रोह से वह चकित नहीं हुआ। उस ने हमें हमारी ही मुर्खता से बचाने की योजना पहले से बना रखी थी। प्रकाशितवाक्य 13:8 उन नामों का संकेत देता है जो "उस मेमने की जीवन की पुस्तक में लिखे ... गए, जो जगह की उत्पत्ति के समय से घात हुआ है" (देखें 2 थिस्सलुनीकियों 2:13; 2 तीमुथियुस 1:9)।

क्या आप मान सकते हैं कि परमेश्वर आपसे इतना प्रेम करता है? आपके जन्म लेने से भी पहले जब संसार की अभी योजना ही बनी थी, परमेश्वर को मालूम था कि आप पाप करोगे और उसका दिल तोड़ोगे। उस ने आपसे प्रेम किया और फिर भी आपको चुन लिया।

डिजाइन "जैसा उस ने हमें जगत की उत्पत्ति से पहिले उस में चुन लिया, कि हम उस के निकट प्रेम में पवित्र और पवित्र और निर्दोष हों" (1:4)। परमेश्वर ने ऐसा क्यों किया? इस सब में उसका क्या डिजाइन था? परमेश्वर हमारी संगति चाहता था। वह मनुष्य के साथ एक बार फिर से वैसे ही बातें करना और चलना चाहता था, जैसे आदम और हव्वा को अदन की वाटिका में से निकालने से पहले करता था। परन्तु हम बिना दो आवश्यक गुणों अर्थात पवित्रता और निर्दोषपन के परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं पहुंच सकते थे।

यदि हमारे पास कोई चीज नहीं है तो वह पवित्रता और निर्दोषपन का ईश्वरीय स्वभाव है। सबने पाप किया है। हर व्यक्ति संगति के परमेश्वर के मापदण्ड से गिर गया है। अपने संसाधनों के द्वारा हम कभी दोबारा परमेश्वर के चेहरे को नहीं देख सकते थे, तौभी कलवरी पर यीशु का काम हमें परमेश्वर की उपस्थिति में जाने के योग्य बनाता है। हम पढ़ते हैं:

> ... मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उस के लिए दे दिया कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। और

उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो (5:25-27)।

इरादा : ... "उस ने हमें ... प्रेम में ... ठहराया" (1:4, 5)। परमेश्वर को इतनी सारी परेशानी में पड़ने के लिए किस बात ने प्रेरा? हमारी भलाई ने, हमारी लोचता ने, हमारे जबर्दस्त व्यक्तित्वों ने? उस ने ऐसा केवल इसलिए किया, क्योंकि वह हमसे प्रेम करता है (यूहन्ना 3:16)।

क्या आपके जीवन में कोई गुप्त पाप है? क्या आपके जीवन से प्रेम की कमी और परमेश्वर की परवाह की झलक मिलती है? इस से कोई फर्क नहीं पड़ता। परमेश्वर तब भी आपसे प्रेम करता है। उसी प्रेरणा ने स्वर्ग और पृथ्वी को आपके लिए सच्ची संगति में उस के पास लौटाना सम्भव बनाने के लिए उसे प्रेरणा दी है।

परमेश्वर के प्रेम के कारण हमारा सनातन भविष्य सुरक्षित है। कोई खामी नहीं है। जो यीशु में है, उनमें से किसी को भी अचानक नजरअन्दाज नहीं किया गया है। यदि आप यीशु में हैं, तो आपके लिए परमेश्वर की छुटकारे की योजना पक्की है। परमेश्वर के बड़े प्रेम ने उसे भरोसे से उस की ओर लौटने वाले सब लोगों के लिए मार्ग निकालने के लिए प्रेरित किया है।

परिणाम : "उस में हमें ... प्रेम में ... पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उस के **लेपालक पुत्र हों**" (1:4, 5)। हमें इस आयत के संदेश पर विचार करना चाहिए। हम गुलाम, दास, मित्र, पड़ोसी या सहयोगी नहीं हैं। हम पुत्र हैं। लूका 15 अध्याय वाला उड़ाऊ पुत्र घर लौट आया तो अपने पिता के साथ पूर्ण संगति में ग्रहण कर लिए जाने पर बहुत चकित हुआ। उसी प्रकार से हमें परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा सारे अधिकारों के साथ परमेश्वर के परिवार में लौटने दिया जाता है।

पुत्र होने के कारण हमें बताया जाता है कि जो कुछ परमेश्वर का है वह सब कुछ हमारा है (देखें लूका 15:22)। हमें परिवार में गोद ले लिया जाता है और इस के साथ जुड़ी सब आशिषें दी जाती हैं।

लक्ष्य : "प्रेम में ... अपनी इच्छा के भले अभिप्राय के अनुसार हमें अपने लिए पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उस के लेपालक पुत्र हों, कि उस के उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो ..." (1:4-6)। परमेश्वर ने जो कुछ किया वह सब उस ने क्यों किया? उस के हमें चुनने और पवित्र और निर्दोष कहने के उस के लक्ष्य को समझने की आवश्यकता है।

परमेश्वर पापियों का उद्धार इसलिए नहीं करना चाहता, क्योंकि वह उन पर तरस खाता है या खास कर इसलिए कि वह उन्हें अनन्त नरक से बचाना चाहता है। अन्य सभी कारणों से बढ़कर परमेश्वर ने मनुष्य जाति के इतिहास में पुरूषों और स्त्रियों को बचाने के लिए काम किया है, ताकि उसे अनन्त महिमा मिल सके। पाप में गिरी हुई मनुष्य जाति को, जो छुटकरे की हकदार न थी, छुटकारा परमेश्वर की असीम बुद्धि के कारण है, जिस से स्वर्ग की सब सेनाएं उस के अद्वितीय नाम को महिमा देती हैं।

सारांश : हमें पवित्रता और निर्दोषता में बहाल करना ताकि हम एक बार फिर से उस की संगति को जान सकें, चाहे हम उस के योग्य नहीं हैं, परमेश्वर के हृदय को आनन्दित

करता है। यह उसे आनन्द देता है। इसी कारण यह बड़े दुख की बात है कि जब हम पवित्रता की बुलाहट को हल्के से लेते हैं तो हम उस आनन्द को कम करते हैं जो परमेश्वर उन लोगों के द्वारा जिन्हें उस के अनुग्रह के द्वारा चुना गया है, लेने को तड़पता है। आइए हम उन लोगों की तरह रहें जिन्हें इस्त्राएल के पवित्र परमेश्वर की ओर से अपनी संतान होने के लिए चुना गया है।

– क्रिस बुलर्ड

आत्मिक आशिषें गिनाई गई (1:4–14)

1:4–14 पौलुस ने सात आत्मिक आशिषें बताईं। "सात" पूर्णता या सिद्धता का अंक है इस कारण हम इन सात आशिषें को मसीह में मिलने वाली सभी आशिषों के सार के रूप में देख सकते हैं। (1) हमें मसीह में चुना गया (1:4)। परमेश्वर ने हमें अनन्तकाल से पवित्र और निर्दोष होने को चुना। (2) हमें मसीह में पहले से ठहराया गया था (1:5, 6)। परमेश्वर ने अपने प्रेम और अनुग्रह के कारण जो उस ने हम पर "उस प्रिय" में किया, हमें लेपालक होने के लिए पहले से ठहराया। परमेश्वर ने ऐसा अपनी ही महिमा की स्तूति के लिए किया। (3) हमें मसीह में उस के लहू के द्वारा छुड़ाया गया (1:7)। (4) हमें अपने अपराधों की क्षमा दी गई क्योंकि उस ने हम पर अपना अनुग्रह किया (1:7, 8)। (5) परमेश्वर ने हम पर अपने भेद को जो स्वर्ग और पृथ्वी को मिलाने के लिए था, प्रकट करने पर मसीह में प्रकाशमान किया (1:9, 10)। (6) हमें परमेश्वर की महिमा की स्तूति के लिए मसीह में मीरास मिली है (1:11, 12)। (70) हम पर मसीह में आने पर आत्मा के साथ छाप लगाई गई। आत्मा का दान हमारे अन्तिम छुटकारे को ध्यान में रखते हुए हमारी मीरास का बयाना है और परमेश्वर की महिमा की स्तुति के लिए है (1:13, 14)।

"आपने सुना होगा"

जॉन स्टेसी

जैसा कि कहा गया है, कि आपने सुना होगा कि कुछ मसीह की कलीसिया को भी एक सम्प्रदाय ही कहते हैं। रोमियों 16:16, 17 में हम इस प्रकार पढ़ते हैं, "तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार। अब हे भाईयो, मैं तुम से बिनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुम ने पाई है फूट पड़ने, और ठोकर खाने के कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो और उन से दूर रहो।" यहां "मसीह की कलीसियाओं" का तात्पर्य अनेक साम्प्रदायीक कलीसियाओं से नहीं है, पर उस एक कलीसिया की अनेक मन्डलियों से है जो मसीह के नाम से कहलाती हैं और एक ही विश्वास और एक ही मत की हैं। सो मसीह की कलीसिया एक सम्प्रदाय कदापी नहीं है।

मसीह की कलीसिया के सारे सदस्य केवल मसीही नाम से कहलाते हैं। 1 पतरस 4:16 में लिखा है, "पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिये परमेश्वर की महिमा करे।" मसीही लोगों को बाइबल में पवित्र लोग, भाई, और याजक कहकर भी सम्बोधित किया गया है। ऐसे ही, मसीह की कलीसिया को कलीसिया (इफिसियों 3:10), परमेश्वर की कलीसिया (1 कुरिन्थियों 1:2), और पहलौठे की

कलीसिया (इब्रानियों 12:23) कहा गया है। मसीह की कलीसिया के असाम्प्रदायिक होने का एक प्रमाण यह भी है कि उसके पास बाइबल के अतिरिक्त धर्मसार के रूप में दुआ-ए आम, इन्तिखाबी सबक, या कैटेकिजम जैसी कोई अन्य पुस्तक नहीं है। केवल मसीह और उसका नया नियम ही उसकी कलीसिया का धर्मसार है। हम सब बातें केवल बाइबल के अनुसार ही करते हैं। जैसे कि, "हर एक पवितशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।" (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। 2 पतरस 1:3 में लिखा है, "क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है।" प्रकाशितवाक्य 3:8 में यीशु ने फिलेदिलफिया में कलीसिया की प्रशंसा करके यूं कहा था, "मैं तेरे कामों को जानता हूं ... और तू ने मेरे वचन का पालन किया है और मेरे नाम का इन्कार नहीं किया।" आज भी प्रभु यीशु को ऐसे ही लोगों की आवश्यकता है जो उसके नाम को और उसके वचन को मानते हैं।

बाइबल के अध्ययन की ओर वापस

चार्ल्स बॉक्स

इस संसार में सबसे बड़ी आशीष यदि कोई है तो वह मसीही होना ही है। सच्चे मसीही का जीवन मसीह ही होता है। पौलुस ने कहा था, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है; और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया और मेरे लिए अपने आप को दे दिया" (गलातियों 2:20)। आप **केवल मसीही** हो सकते हैं। कितनी बड़ी आशीष है!

परमेश्वर से दूर रहकर सच्चा आनन्द नहीं। मनुष्य को यह समझ कब आएगी कि हर सच्ची खुशी परमेश्वर के कारण ही है और वही इसे देता है? पाप मनुष्य को परमेश्वर से अलग करता है और मनुष्य के दु:ख का सबसे बड़ा कारण है। "परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है, और तुम्हारे पापों के कारण उसका मुंह तुमसे ऐसा छिपा है कि वह नहीं सुनता" (यशायाह 59:2)। पाप के कारण मनुष्य को खालीपन और अकेलापन मिलता है और उसका मन दु:खी रहता है। यह पहले भी सच था और आज भी सच है कि "... विश्वासघातियों का मार्ग कड़ा होता है" (नीतिवचन 3:5)। पाप की मजदूरी दु:ख ही है।

शैतान के वश में रहने वाले लोगों को थोड़ी देर का आनन्द मिलता है परन्तु यह आनन्द बहुत समय तक नहीं रहता। सदा रहने वाला आनन्द या संतुष्टि परमेश्वर के सिवाय कोई और नहीं दे सकता।" क्योंकि हम उसी में जीवित रहते, और चलते-फिरते, और स्थिर रहते हैं; जैसे तुम्हारे कितने कवियों ने भी कहा है, 'हम तो उसी के वंशज हैं"' (प्रेरितों के काम 7:28)। हम सब के अंदर कहीं न कहीं कुछ खालीपन रहता है जिसे केवल परमेश्वर ही भर सकता है। "जीवतें ईश्वर, हां परमेश्वर का, मैं प्यासा हूं, मैं कब जाकर परमेश्वर को अपना मुंह दिखाऊंगा?" (भजन संहिता 42:2)। परमेश्वर से दूर रहते हुए मर जाना बहुत बड़ी त्रासदी

होगी। "तुम लोग उस समय मसीह से अलग और इस्राएल की प्रजा के पद से अलग किए हुए, और प्रतिज्ञा की वाचाओं के भागी न थे, और आशाहीन और जगत में ईश्वररहित थे" (इफिसियों 2:72)।

स्वर्ग में एक परमेश्वर है जो हमसे प्रेम करता है और हमें खुश देखना चाहता है। यूहन्ना 3:6 को बाइबल की सुनहरी आयत में कहा गया है: "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" परमेश्वर के प्रेम का पता क्रूस पर उसके पुत्र के दान में चलता है। परमेश्वर ने हमें बाइबल देकर अपने प्रेम को दिखाया है ताकि हम उसकी इच्छा को जान सकें। परमेश्वर का प्रेम हमें उसके राज्य यानी कलीसिया के लोग बनने की आशीष देने में भी देखने को मिलता है।

परमेश्वर के साथ सहभागिता करने से प्रसन्नता और मन में आनन्द मिलता है। यीशु ने कहा, "मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ" (यूहन्ना 10:10)। परमेश्वर को जानने वाले लोगों को इस जीवन में सच्चा आनन्द और अगले संसार में स्वर्ग मिलता है। "और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें" (यूहन्ना 17:3)।

जब किसी को परमेश्वर के प्रेम और हमारी भलाई और प्रसन्नता की उसकी इच्छा समझ आ जाती है तो उसे बड़ी सच्चाई का पता चल जाता है। "परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा" (रोमियों 5:8)। परमेश्वर सचमुच में हम से प्रेम करता है। वह हमारी ओर है और हमें स्वर्ग में ले जाना चाहता है। "अत: हम इन बातों के विषय में क्या कहें? यदि परमेश्वर हमारी ओर है, तो हमारा विरोधी कौन हो सकता है?" (रोमियों 8:31)। जीवन में चाहे जैसी परिस्थितियां क्यों न हों, परमेश्वर हर परिस्थिति में हमारे मनों को शांति दिला सकता है। "हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं; अर्थात उन्हीं के लिये जो उसकी इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं" (रोमियों 8:28)।

वास्तविक और सदा रहने वाले आनन्द को पाने का एक तरीका है। परमेश्वर का आनन्द आत्मिक है, न कि सांसारिक। सच्चा आनन्द अपने जीवनों में परमेश्वर को उचित स्थान देने से मिलता है। "इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी" (मत्ती 6:33)। सांसारिक वस्तुएं संतुष्टि नहीं दे सकतीं। जितनी अधिक वे हमारे पास होती हैं उतना ही हमें लगता है कि हमारे पास वे कम हैं। और होनी चाहिए।" और उसने उनसे कहा, 'चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने आप को बचाए रखो; क्योंकि किसी का जीवन उस की संपत्ति की बहुतायत से नहीं होता' " (लूका 12:15)।

"...जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नही" (लूका 12:21) उसे सच्चा धन और सच्चा आनन्द नहीं मिलता। धन या सांसारिक वस्तुओं से प्रेम के कारण बुराई ही बढ़ती है जो कि अच्छा नहीं है। "क्योंकि रुपये का लोभ सब प्रकार की बुराइयों की जड़ है, जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए बहुतों ने विश्वास से भटककर अपने आप को नाना प्रकार के दुखों से छलनी बना लिया है" (तीमुथियुस 6:10)।

जिनके पास यीशु है उनके पास वह शांति है जो संसार के पास नहीं है और संसार उनसे उसे छीन नहीं सकता। "मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूँ, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूँ; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन व्याकुल न हो और न डरे" (यूहन्ना 14:27)। यह बात आनन्द करने का असली कारण है। "प्रभु में सदा आनन्दित रहो; मैं फिर कहता हूं, आनन्दित रहो" (फिलिप्पियों 4:4)। हम में से हर कोई यह जान ले कि वास्तविक आनन्द तभी मिलता है जब मेरे जीवन पर परमेश्वर का नियंत्रण होता है।

यदि कोई सच्चा आनन्द चाहे तो उसके लिए आरम्भ करने का समय है। सच्ची खुशी बाइबल को पढ़ना आरम्भ करने से मिलने लगती है। जो लोग परमेश्वर को जानना चाहते हैं उन्हें बाइबल का अध्ययन करना आवश्यक है। "अत: विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है" (रोमियों 10:17)। परमेश्वर को जानने का पहला कदम बाइबल का अध्ययन करना है। परमेश्वर ने अपने संदेश को लिख दिया है ताकि हम इसे पढ़ सकें, इस पर विश्वास कर सकें और इसकी आज्ञा मान सकें। "परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ" (यूहन्ना 20:31)।

अध्ययन करने की मेरी इच्छा से यह पता चलता है कि मैं परमेश्वर को जानने का/की इच्छुक हूं। यह इच्छा मजबूत होनी आवश्यक है। "नये जन्मे हुए बच्चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ" (। पतरस 2:2)। मुझे आज्ञा दी गई है कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए मैं उसके वचन का अध्ययन करूं! "अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो" (2 तीमुथियुस 2:15)।

इस संसार में हो सकता है कि कोई बहुत अधिक ज्ञानी हो, परन्तु परमेश्वर को वह बाइबल का अध्ययन किए बिना नहीं जान सकता। बाइबल का अध्ययन करने से हमें पता चलता है कि परमेश्वर कौन है और हमें उसकी सेवा कैसे करनी है। "और बचपन से पवित्र शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए" (2 तीमुथियुस 3:15–17)।

जीवन में सच्चा आनन्द मुझे तभी मिलता है जब परमेश्वर मेरे जीवन की अगुआई करता है। मसीही बनने के लिए मसीह के सुसमाचार को सुनना (रोमियों 10:17), यीशु को मसीह मानकर उसमें विश्वास लाना (यूहन्ना 8:24), अपने पापों से मन फिराना (प्रेरितों के काम 17:30–31), यीशु में अपने विश्वास का अंगीकार करना (प्रेरितों के काम 8:37) और पापों को धो डालने के लिए बपतिस्मा लेना (प्रेरितों के काम 22:16) आवश्यक है। बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लेने पर परमेश्वर निष्कपट मन वाले व्यक्ति को प्रभु की कलीसिया में मिला लेता है। मसीही व्यक्ति के लिए मरने तक विश्वासी रहना भी आवश्यक है (प्रकाशितवाक्य 2:10)। क्या आप सच्चे मसीही हो? मसीह में आकर ईमानदारी से मसीही जीवन जीओ।

"बाइबल में से प्रतिदिन ढूंढ़ो" ✝